Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

भाग – 3

संस्कृत, बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

SUPER – TET (2022)

CONTENTS

संस्कृत

1.	माहेश्वर सूत्र	1
	• वर्ण विचार उच्चारण स्थान	3
2.	सन्धिप्रकरणम्	6
3.	समास प्रकरण	17
4.	प्रत्यय	22
5.	छन्दः शास्त्र परिचय	35
6.	अव्यय प्रकरण	42
7.	शब्द रूप	46
8.	सर्वनाम रूप	54
9.	धातु रूप	58
10.	उपसर्ग (प्रादयः)	71
11.	वाच्य परिवर्तन	73
12.	सूक्तियाँ	75
13.	संख्या ज्ञानं/विशेषण–विशेष्य भाव	78
14.	समयज्ञानम्	85
15.	अलंकार	92
16.	प्रश्न निर्माण	95
17.	अशुद्धि संशोधन	97
18.	हिन्दी–संस्कृत अनुवाद	99
19.	विलोमार्थी शब्द	104
20.	पर्यायवाची शब्द	111
21.	वचन	114
22.	कारक	116
23.	अपठित पद्यांश	124
24.	अपठित गद्यांश	126

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

1.	मनोविज्ञान की अवधारणा	129
2.	बाल विकास	151
3.	अधिगम एवं अधिगम प्रक्रिया व अधिगम में आने वाली कठिनाईयाँ	179
4.	व्यक्तित्व	225
5.	समायोजन एवं कुसमायोजन	241
6.	व्यक्तिगत भिन्नता	249
7.	अभिप्रेरणा	256
8.	बुद्धि	264
9.	चिन्तन, तर्क एवं कल्पना	279
10.	आंकलन, मापन एवं मूल्यांकन	289
11.	समग्र एवं सतत् मूल्यांकन	294
12.	उपलब्धि परीक्षण	297
13.	सीखने के प्रतिफल	301
14.	क्रियात्मक अनुसंधान	304
15.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005 (NCF - National Curriculum Framework 2005)	306
16.	निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिनियम – 2009 (Right to Children to Free and Compulsory Education Act, 2009)	308
17.	मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण पुस्तकें	317
18.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	319
19.	प्रायोजना कार्य	334
20.	सीखने के प्रतिफल	336
21.	मूल्यांकन	341

सन्धिप्रकरणम्

(व्युत्पत्ति :– वि + आङ्. + कृ + ल्युट्)

व्युत्पत्ति – सम उपसर्ग + डुधाञ् (धा) धातु + कि प्रत्यय (सम् + धा + कि)

भेदाः – स्वर सन्धिः (अच् सन्धिः)

1. **दीर्घ :** – संधि (अकः सवर्णे दीर्घः) लृकार का दीर्घ नहीं होता हैं।
   - (i) अ/आ + अ/आ = आ
   - (ii) इ/ई + इ/ई = ई
   - (iii) उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
   - (iv) ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ
   - (v) ऌ + ऌ = ऌ

   यथा –परि + ईक्षा = परीक्षा

   हरि + ईशः = हरीशः

   गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

   मातृ + ऋणम् = मातृणाम्

   पितृ + ऋद्धिः = पितृद्धि

   ऌ + ऌकारः = ऌकारः

2. **गुण सन्धि** – (''अदेङ्गुणः'')
   - अर्थ – **अ** या **आ** के बाद **इ** या **ई** आये तो दोनों के स्थान पर ए हो जाता हैं। अ या आ के बाद उ अथवा ऊ है तो दोनों के स्थान पर ओ हो जाता है।
   - अ अथवा आ + ऋ/ॠ आये तो अर् हो जाता हैं।
   - अ अथवा आ के बाद ऌ आये तो अल् हो जाता हैं।

   यथा – सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

   सूर्य + उदयः = सुर्योदयः

   महा + ऋषिः = महर्षिः

   तव + ऌकारः = तवल्कारः

3. **वृद्धि सन्धि** – (''वृद्धिरादैच्'')

   इसी प्रकार – अ/आ + ए = ऐ

   अ/आ + ओ = औ

   अ/आ + ऐ = ऐ

   अ/आ + औ = औ

   यथा – एव + एषः = एवैषः

   वन + औषधिः = वनौषधिः

च + एव = चैव

स्थूल + ओतुः = स्थुलौतुः

विशेष उदाहरण – प्र + एधते = प्रैधते

प्र + ऊढिः = प्रौढ़िः

वसन + ऋणम् = वसनार्णम्

4. **यण् सन्धि** – (''इकोयणचि'')

जैसे – इ/ई + असमान स्वर = य्

उ/ऊ + असमान स्वर = व्

ऋ/ॠ + असमान स्वर = र्

ऌ + असमान स्वर = ल्

यथा – नास्ति + एव = नास्त्येव

सति + अपि = सत्यपि

सु + अस्ति = स्वस्ति

ऌ + अनुबन्धः = लनुबन्धः

5. **अयादि सन्धि** –

(i) (''एचोऽयवायावः'')

जैसे – ए + अच् (स्वर) = अय्

ओ + अच् (स्वर) = अव्

ऐ + अच् (स्वर) = आय्

औ + अच् (स्वर) = आव्

यथा –

हरे + ए = हरये

नै + अकः = नायकः

ने + अनम् = नयनम्

जे + अः = जयः

पो + अनम् = पवनम्

धर्मार्थो + उच्यते = धर्मार्थावुच्यते

(ii) ''वान्तो यि प्रत्यये''

यथा – गो + यम् (ग् + अव् + यम्) = गव्यम्

नौ + यम् (न् + आव् + यम्) = नाव्यम्

6. **पररूप संधि**

(i) (''एड़ि पररूपम्'')

अर्थ – अकारान्त उपसर्ग से परे धातु के पहले एड़ (ए, ओ) वर्ण होता हैं तो उन पूर्व और पर् दोनों वर्णों के स्थान पर पररूप एकादेश होता हैं। पररूप सन्धि वृद्धि सन्धि का अपवाद हैं।

यथा – प्र + एजते = प्रेजते

उप + ओषति = उपोषति

(ii) ''शकन्धादिषु पररूप वाच्यम्'' (वार्तिक)

''अचोऽन्त्यादि टि''

यथा – मनस् + ईषा = मनीषा

कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः

7. **पूर्वरूप सन्धि** – (''एड़ः पदान्तादित'')

यथा – हरे + अव = हरेऽव

विष्णो + अव = विष्णोऽव

व्यंजन संधि (हल् सन्धि)

1. **श्चुत्व सन्धि** – (''स्तोः श्चुना श्चुः)

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

श् च् छ् ज् झ् ञ्

यथा – हरिस् + शेते = हरिश्शेते

कस् + चित् = कश्चित्

शार्ङि.न् + जयः = शार्ङि.ञ्जयः

राज् + नी = राज्ञी

अपवाद – श वर्ण के बाद त वर्ग होने पर श्चुत्व नहीं होता हैं।

यथा – प्रश् + नः = प्रश्नः

2. **ष्टुत्व सन्धि** – (''ष्टुना ष्टुः'')

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

यथा – रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

उद् + डयनम् = उड्डयनम्

इष् + तः = इष्टः

सर्पिष् + तमम् = सर्पिष्टमम्

अपवाद – पदान्त ट वर्ग से परे नाम भिन्न सकार या त वर्ग को ष्टुत्व नहीं होता हैं।

यथा – षट् + सन्तः = षट्सन्तः

षट् + तरवः = षट्तरवः

3. चर्त्व सन्धि – (''खरि च'')

अर्थ –1,2,3,4 वर्ण के बाद वर्ग का 1,2, श् ष्, स् वर्ण हो तो पूर्व वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण आदेश हो जाता हैं।

यथा – सद् + कारः = सत्कारः

लिभ् + सा = लिप्सा

विपद् + कालः = विपत्कालः

समिध् + सु = समित्सु

उद् + पन्नः = उत्पन्नः

लभ् + स्यते = लप्स्यते

4. जश्त्व सन्धि

(i) (''झलां जशोऽन्ते'')

क्, च्, ट्, त्, प्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग् ज् ड् द् ब्

यथा – वाक् + ईशः = वागीशः

वाक् + दानम् = वाग्दानम्

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

(ii) ''झलां जश झशि''

अर्थ – पद के बीच में झल् के स्थान पर जश् हो जाता हैं झश् परे रहते अर्थात् वर्गो के 1, 2, 3, 4 तथा श् ष् स् ह् को जश् (उसी वर्ग का तृतीया वर्ण) हो जाता हैं। यदि बाद में वर्गों का तीसरा, चौथा वर्ण हो।

यथा – बुध् + धिः = बुद्धिः

दुध् + धम् = दुग्धम्

लभ् + धः = लब्धः

5. अनुनासिक संधि

(i) (''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'')

क् च् ट् त् प्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ङ् ञ् ण् न् म्

यथा – जगत् + नाथः = जगन्नाथ

वाक् + महिमा = वाङ्.महिमा

(ii) ''प्रत्यये भाषयां नित्यम्''

यथा – वाक् + मयः = वाङ्.मयः

अप् + मयम् = अम्मयम्

समास प्रकरण

समास की परिभाषा – जब दो या दो से अधिक पदों के बीच (मध्य) की विभक्तियों को हटाकर जब एक पद कर दिया जाता है तो उसे 'समास' कहते हैं।
'समास शब्द का अर्थ है 'संक्षेप' अर्थात् विभक्ति रहित अनेक पदों के समूह को समास' कहते हैं।
राज्ञः + पुरुषः = राजपुर पर 'राज्ञः' और 'पुरुषः' दोनों पदों के बीच की विभक्तियाँ हटा देने पर 'राजपुरुष' शब्द बनता है। अतः 'राजपुरुषः' समास–निष्पन्न शब्द है।

समास शब्द की व्युत्पत्ति

समास = सम् + अस् + घञ् = सम् + आस् + अ = समास (सम् उपसर्ग, अस् धातु, घञ् प्रत्यय)

समास विग्रह

'विग्रह' शब्द का अर्थ है अलग–अलग करना अर्थात् समस्त पदों को तोड़कर पूर्व क्रमानुसार अलग–अलग रख देना 'विग्रह' कहलाता है।
जैसे–'राजपुरुष' इस पद को (राज्ञः + पुरुषः) इस रूप में तोड़कर पूर्वक्रमानुसार अलग–अलग रख दिया गया है अतः इसे 'विग्रह' कहेंगे।

समास के भेद

संस्कृत भाषा में समास के मुख्य रूप से चार भेद होते हैं–
1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुब्रीहि समास

नोट – तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं –
1. कर्मधारय समास
2. द्विगु समास

भट्टोजिदीक्षित तथा अग्निपुराण के अनुसार समास के छः भेद होते हैं।
समास के भेद का श्लेषात्मक एक श्लोक प्रसिद्ध है।

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मम गेहे नित्यमव्ययीभावः। तत्पुरुष! कर्मधारय येन स्यामहं बहुब्रीहिः॥

जिससे समास के छः भेदों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस प्रकार समास के निम्नलिखित छः भेद प्रमुख हैं।

समास के भेद

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वन्द्व समास

1. **तत्पुरुष समास** – 'उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुष', अर्थात् जहाँ पर उत्तर (अन्तिम) पद का अर्थ प्रधान होता है वहाँ तत्पुरुष समास होता है।
   जैसे– 'राजपुरुषः = राजपुरुषः' में पुरुष की प्रधानता है।

- जहाँ पर दोनों पदों में अलग–अलग विभक्तियाँ हो उसे व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। इसे ही विभक्ति तत्पुरुष भी कहते हैं।
  जैसे– राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः
- जहाँ पर दोनों पदों में एक समान विभक्तियाँ होती हैं उसे समानाधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। इसे ही कर्मधारय एवं द्विगु समास भी कहते हैं।
  जैसे – कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

विभक्ति तत्पुरुष – विभक्ति तत्पुरुष समास में दोनों पदों में अलग–अलग विभक्तियाँ होती हैं अतः इसे विभक्ति तत्पुरुष भी कहते हैं।
विभक्ति तत्पुरुष समास सात प्रकार का होता है।

समास के भेद का चार्ट

(i) प्रथमा तत्पुरुष
(ii) द्वितीया तत्पुरुष
(iii) तृतीया तत्पुरुष
(iv) चतुर्थी तत्पुरुष
(v) पञ्चमी तत्पुरुष
(vi) षष्ठी तत्पुरुष
(vii) सप्तमी तत्पुरुष

(i) **प्रथमा तत्पुरुष –** तत्पुरुष समास में प्रथम पद में प्रथमा विभक्ति होती है
जैसे –

- पूर्व कायस्य = पूर्वकायः
- अपरं कायस्य = अपरकायः
- अर्धं पिपल्याः = अर्धपिप्पली

(ii) **द्वितीया तत्पुरुष** – समास की अवस्था में द्वितीया विभक्ति का लोप पाया जाता है।
जैसे –

- कृष्णम् श्रितः = कृष्णाश्रितः
- दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः
- ग्रामं गतः = ग्रामगतः
- नरकम् पतितः = नरहरित्रा
- गजं आरूढ़ = गजारूढ़

(iii) **तृतीया तत्पुरुष** – समास की अवस्था में तृतीया विभक्ति का लोप पाया जाता है।
जैसे –

- धान्येन अर्थः = धान्यार्थः (धान्य से अर्थ)
- आचारेण निपुणः = आचारनिपुणः (आचार से निपुण)
- विद्यया हीनः = विद्याहीन (विद्या से हीन)
- अग्निननादग्धः = अग्निदग्ध

- गुरुणा सदृशः = गुरुणा सदृश (गुरु से सदृश)
- मदे रहितः = मदरहित

(iv) **चतुर्थी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में चतुर्थी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- द्विजाय सुखम् = द्विजसुखम् (ब्राह्मणों के लिए सुख)
- द्विजाय अर्थम् = द्विजार्थः (द्विज के लिए यह)
- गवे रक्षितम् = गो रक्षितम् (गायों के लिए रक्षा)
- गवेहितम् = गोहितम्
- धनाय लोभः = धन लोभः
- सुखाय अर्थम् = सुखार्थम् (सुख के लिए यह)

(v) **पञ्चमी तत्पुरुष –** समास की अवस्था में पंचमी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- स्वर्गात पतितः = स्वर्ग पतितः (स्वर्ग से पतित)
- वृकात् भीतः वृकभीत (वृक से भीत)
- देशांत् निर्गतः देशनिर्गत (देश से निर्गत)
- अश्वात् पतितंः = अश्वपतितः
- सिंहात् भयम् = सिंहभयम् (सिंह से भय)
- रोगात् मुक्तः = रोगमुक्त (रोग से मुक्त)

(vi) **षष्ठी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में षष्ठी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः (राजा का पुरुष)
- विद्यायाः आलयः = विद्यालयः (विद्या का स्थान)
- देवानां पूजकः = देवपूजकः (देवताओं का पूजक)
- विद्याः आलयः = विद्यालय (विद्या का आलय)
- धर्मस्थ दण्डः = धर्मदण्ड़
- सुवर्णस्य मुद्रा = सुवर्णमुद्रा
- गृहस्य स्वामी = गृहस्वामी

(vii) **सप्तमी तत्पुरुष** – समास की अवस्था में सप्तमी विभक्ति का लोप पाया जाता है।

- अक्षेष शौण्ड = अक्षशौण्डः (अक्ष (पासों) में चतुर)
- वचने धूर्तः = वचनधूर्तः – (वचन में धूर्त)
- आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः (धूप में सूखा)
- कार्ये कुशलः = कार्य कुशलः
- जले मग्नः = जलमग्नः
- शास्त्रेषु दक्षः = शास्त्रदक्षः

2. **कर्मधारय समास** – समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय समास कहते हैं। जहाँ पर विशेषण और विशेष्य का समानाधिकरण समास होता है उसे 'कर्मधारय समास कहते हैं।

- घन + इव + श्यामः = घनश्यामः (बादल के समान काला)
- वज्रम् इव कठोरम् इति वज्रकठोरम् (वज्र के समान कठोर)
- पुरुष व्याघ्रः + इव = पुरुषव्याघ्रः (पुरुष व्याघ्र के समान)
- नरः सिंह + इव = नरसिंहः (मनुष्य सिंह के समान)
- मुखं चन्द्र + इव = मुखचन्द्रः (मुख चन्द्रमा के समान)
- पुरुषः सिंहः इव = पुरुषसिंहः (पुरुष सिंह के समान)
- महान् + राजा = महाराजः (महान् राजा)
- पीतम् + अम्बरम् = पीताम्बरम् (पीला अम्बर)

3. **द्विगु समास** – यदि कर्मधारय समास का पूर्व पद (पहला पद) संख्यावाची हो तो वह 'द्विगु समास' कहलाता है।

इसके विग्रह में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

- पूर्वस्यां शालायां भवः = पौर्वशालाः (पूर्व की शाला में उत्पन्न)
- पंचसु कपालेषु संस्कृतः = पंचकपालः (पाँच कपालों में बनाया हुआ)
- पञ्चभिः गोभिः क्रीतः = पंचगुः (पाँच गायों से खरीदा गया)
- पञ्च गावो धनं यस्य सः = पञ्चगवधनः (पाँच गाय हैं धन जिसकी)
- द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः (दो मासों में उत्पन्न)

4. **द्वन्द्व समास –** उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः' अर्थात् जहाँ पर दोनों पदों का अर्थ प्रधान होता है उसे द्वन्द्र समास कहते हैं।

- हरिश्च हरश्च = हरिहरौ (हरि और हर)
- धवश्च खदिरश्च = धवखदिरौ (धव और खदिर)
- भावश्च केशवश्च = शिव केशवौ (शिव और केशव)
- हरिश्च हरश्च गुरुश्च = हरिहरगुरवः (हरि, हर और गुरु)
- कुक्कुटश्च मयूरी च = कुक्कुटमयूर्ये (कुक्कुट और मयूरी)
- ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ (ईश और कृष्ण)
- शिवश्च केशवश्च = शिवकेशवौ (शिव और केशव)
- पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (हाथ और पैर)
- गंगा च शोणश्च गंगाशोणम् (गंगा और शोण)

5. **अव्ययीभाव समास** – 'पदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिसका पूर्व अथवा प्रथम पद का अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास का प्रथम पद का अर्थ प्रधान होता है।

- समुद्रम् = मद्रणां समृद्धिः (मद्रवासियों की समृद्धि)
- दुर्यवनम् = यवनानां व्यृद्धि (यवनों की व्यृद्धि)
- निर्मक्षिकम् = मक्षिकाणाम भावः (मक्खियों का अभाव)
- अतिहिमम् = हिमस्य अव्ययः (हिम का नाश)

अधिगम

- अधिगम का शाब्दिक अर्थ – सीखना है।
- मनोविज्ञान की भाषा में सीखनें की प्रक्रिया को ही अधिगम कहा जाता है।
- व्यवहार में अभ्यास के फलस्वरूप हुए अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को अधिगम कहा जाता है।

[UPTET-2013]

- मनोवैज्ञानिकों ने सीखनें को मानसिक प्रक्रिया माना है। यह क्रिया जीवनभर निरंतर चलती रहती है।
- **सीखनें की प्रक्रिया की दो मुख्य विशेषताएँ है–**

निरन्तरता	सार्वभौमिकता

- यह प्रक्रिया सदैव और सर्वत्र चलती रहती है इसलिए मानव अपने जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है।
- सीखना एक विस्तृत एवं सतत् प्रक्रिया है। सीखनें का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसको किसी एक सामान्य भाषा में व्यक्त करना मुश्किल है। अधिगम शब्द का प्रयोग परिणाम एवं प्रक्रिया दोनों रूप में होता है।

अधिगम की परिभाषाएँ

- **वुडवर्थ** – सीखना, विकास की प्रक्रिया है।
- **स्कीनर** – सीखना व्यवहार में प्रगतिशील सामंजस्य की प्रक्रिया है।
- **वुडवर्थ** – नवीन ज्ञान व नवीन प्रतिक्रियाओं को अर्जित करने की प्रक्रिया को अधिगम कहा जाता है।

[CTET-BTET-2011]

- **क्रो एवं क्रो** – "सीखना, आदत, ज्ञान, अभिवृत्तियों के अर्जन को अधिगम कहा जाता है।"
- **क्रानबेक** – "सीखना अनुभव के फलस्वरूप व्यवहार में प्रदर्शित होने वाला परिवर्तन है।"
- **गेटस व अन्य** – अनुभव व प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम हैं। **[UPTET - 2014]**
- **डॉ. एस.एस.माथुर** – "सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अपनें कार्य पर निर्भर करती है जबकि मानसिक अभिवृद्धि तथा प्रौढ़ता विकास की प्रक्रिया है।
- **हिलगार्ड** – "नवीन परिस्थितियों में अपने आप को अनुकूलित करना ही अधिगम है।"
- **ई.ए.पील.** – सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण से होता है।
- **स्कीनर** – व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की प्रक्रिया को अधिगम कहा है। **[CHHTET - 2011]**

[REET - 2016]

- **मर्फी** – अधिगम व्यवहार एवं दृष्टिकोण दोनों का परिमार्जन है।
- **गिलफोर्ड** – व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
- **मॉर्गन एवं गिलीलैण्ड** – सीखना अनुभव के परिणामस्वरूप प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन है जो प्राणी द्वारा कुछ समय के लिए धारण किया जाता है।
- **ब्लेयर, जोन्स, सिम्पसन** – व्यवहार में कोई भी परिवर्तन जो व्यक्ति के अनुभवों का फल हो और जो भावी परिस्थितियों का सामना करने में अलग प्रकार से सहायक हो अधिगम कहलाता है।

- **किंग्सले एवं गैरी** – अभ्यास के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार करने की प्रक्रिया को अधिगम कहा जाता है।
- **प्रेसी** – सीखना उस अनुभव को कहते है जिसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन या समायोजन है।
- **कॉलविन** – पूर्व निर्मित व्यवहार में अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन या समायोजन है।
- **पावलाव** – अनुकूलित अनुक्रिया के परिणामस्वरूप आदत का निर्माण ही अधिगम है।
- **गार्डनर मरफी** – अधिगम वातावरण संबंधी आवश्यकता की पूर्ति के लिए व्यवहार में होनें वाला परिवर्तन है।
- **मॉर्गन** – अधिगम अपेक्षाकृत व्यवहार में स्थायी परिवर्तन है जो अभ्यास अथवा अनुभव के परिणाम स्वरूप होते है।

अधिगम की विशेषताएँ [NCERT - Page 112]

1. अधिगम एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्राणियों की जन्मजात प्रवृत्ति है।
2. अधिगम एक गतिशील एवं विकासात्मक प्रक्रिया है। **[CTET - 2012]**
3. अधिगम अमूर्त एवं आन्तरिक रूप से सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया है।
4. अधिगम एक सार्वभौमिक घटना है। संसार के सभी प्राणी हर वक्त कुछ ना कुछ नया सीखता रहता है।
5. अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है। व्यक्ति तभी सीख सकता है जब वह सीखनें की प्रक्रिया में क्रियाशील व तत्पर रहता है।
6. अधिगम आनुवांशिकता व वातावरण दोनों पर निर्भर करता है।
7. अधिगम समस्या समाधान में सहायक है। अधिगम के दौरान व्यक्ति नवीन तथ्यों व अनुभवो को ग्रहण करता है जो विभिन्न परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध होता है।
8. अधिगम प्रक्रिया व्यक्ति को अपने पर्यावरण के साथ अनुकूलन में मदद करता है।
9. अधिगम एक क्रमिक व निरन्तर जारी रहने वाली प्रक्रिया है।
10. अधिगम मे पूर्व अनुभवों की लगातार पुनरावृति होती रहती है जिससे ज्ञान स्थायी हो जाता है। अध्ययन प्रक्रिया में जो बालक अधिक क्रियाशील रहता है अधिगम उतना ही प्रभावी होगा।
11. अधिगम वातावरण की उपज है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक दोनो प्रकार से होते है। व्यक्ति जैसे वातावरण में रहता है वैसा ही ज्ञान प्राप्त करता है।
12. अधिगम के माध्यम से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। यह एक विवेकपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रखती हैं।
13. अधिगम एक खोज है। इसमें व्यक्ति नवीन ज्ञान प्राप्त कर अपनी क्षमताओं का विकास करता है।
14. अधिगम में अनुभवों के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होता है।
15. अधिगम सदैव उद्देश्य पूर्ण होता है। अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन आता है जो धनात्मक और प्रगतिशील होता है। **[HTET, P.G.T - 2016]**

अधिगम प्रक्रिया

अभिप्रेरणा → अनुक्रिया → बाधाएँ → पुनर्बलन →अनुभवों का संगठन → लक्ष्य

अधिगम के प्रकार

1. ज्ञानात्मक (बौद्धिक विकास से ज्ञान प्राप्त)
2. भावात्मक (रूचि के अनुसार भाव जगाना)
3. क्रियात्मक (क्रिया करके सीखना)

1. **संवेदन गति संबंधी सीखना** – इसमें अधिगमकर्ता संवेदना व गतिय क्रियाओं से सीखता है।
   - इसे गामक अधिगम भी कहा जाता है।
   - दैनिक जीवन के अधिकांश कार्य इस श्रेणी में आते है।
     जैसे– पेन में लिखना, टाइप करना, घर का कार्य करना।
2. **साहचर्यात्मक सीखना** – जब पुराने ज्ञान तथा अनुभव के द्वारा किसी तथ्य को सीखा जाता है तो इसे साहचर्यात्मक सीखना कहते है।
3. **शारीरिक अंगो से सीखना** – बौद्धिक शक्ति के सक्रिय न होनें पर व्यक्ति शारीरिक अंगो के द्वारा सीखता है।
   जैसे – जन्म के बाद बच्चे द्वारा किसी वस्तु को पकड़ने के लिए अपने हाथ पैर सभी एक साथ चलाना।
4. **बौद्धिक अधिगम** – इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति मानसिक क्रियाओं के द्वारा सीखता है।
   जैसे – तर्क करना, गणितीय सूत्र को सीखना।
5. **प्रत्यक्षात्मक सीखना (अधिगम)** – जिन वस्तुओं के अपने सामने आने पर उनकी पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है उसको प्रत्यक्षण अधिगम कहते है।
6. **गुणाकंन अधिगम** – वस्तु के मूल्य, गुण आदि को स्पष्ट करने वाले ज्ञान को गुणाकंन अधिगम कहते है।
7. **सम्प्रत्यात्मक अधिगम** – बालक अपने साधारण ज्ञान के आधार पर तर्क, चिन्तन व कल्पना के माध्यम से अमूर्त बातों को सीखना।
   - इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति अमूर्त चिन्तन के माध्यम से कठिन एवं जटिल समस्याओं का हल खोजता है।
8. **वाचिक अधिगम** – बोलकर सीखने को वाचिक अधिगम कहते है।
   जैसे – शब्द, अंक, संकेत आदि को वाणी के माध्यम से पढ़कर सीखता है।
9. **अभिवृत्यात्मक अधिगम** – अभिवृति में किसी व्यक्ति या वस्तु आदि के प्रति धारणा होती है उसको प्रकट किया जाता है।
10. **अन्तः प्रेरणात्मक अधिगम** – यह अधिगम संवेगात्मक माध्यम से होता है। इस प्रकार के कार्य करने के लिए व्यक्ति को प्रेरणा उसके स्वयं के अन्दर से प्राप्त होती है। इस प्रकार की अन्तः प्रेरणा से व्यक्ति में त्याग, बलिदान, प्रेम आदि संवेग उत्पन्न हो जाते है।
    - डॉ. मेस के अनुसार स्मृति का स्थान मस्तिष्क में नहीं अपितु शरीर के अवयवों में है यही कारण है कि हम करके सीखते है।

राबर्ट गेने का अधिगम सिद्धांत **[HTET - 2017, 2018]**

- राबर्ट गेने ने अपनी पुस्तक Conditions of Learning (अधिगम की शर्ते) में अधिगम के सिद्धांत को 1965 में प्रतिपादन किया।
- गेने ने अधिगम को आठ प्रकार से श्रृंखलाबद्ध रूप में वर्गीकृत किया है। **[UPTET - 2013]**
- गेने ने इन दशाओं को सरल से जटिल क्रम में प्रस्तुत किया है। इस श्रृंखला में सबसे ऊपर समस्या समाधान है। इस श्रृंखला या पिरामिड के किसी भी स्तर पर अधिगम की प्रक्रिया होनें के लिए आवश्यक है कि उसके नीचे के सभी प्रकार के अधिगम हो चुकें है।

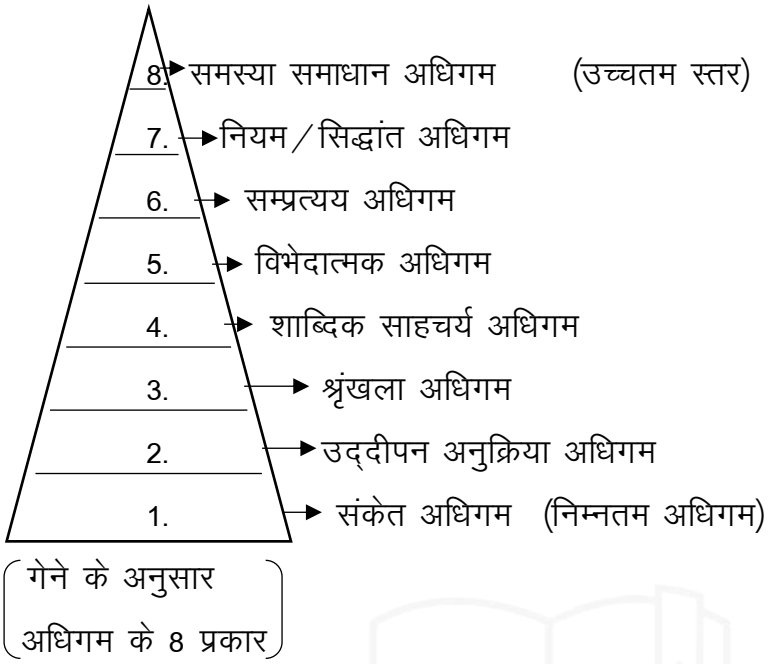

1. **सांकेतिक अधिगम** – संकेत अधिगम पावलाव के शास्त्रीय अनुबंधन अधिगम के समान होता है।
   - इसमें व्यक्ति दिए गए संकेत के प्रति अनुबंधित अनुक्रिया करता है।
   - संकेत अधिगम को रूढीगत अनुकूलन भी कहते है। **[UPTET - 2013]**
   - यह सबसे निम्न अधिगम माना जाता है।
2. **उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम** – इस अधिगम में प्राणी किसी उद्दीपन के प्रति ऐच्छिक क्रिया करता है।
   उदाहरण – स्कीनर के क्रिया प्रसूत अनुबंधन में चूहे द्वारा लीवर दबाना सीखना।
3. **श्रृंखला अधिगम** – यह अधिगम एक क्रम में होने वाला अलग–अलग कई उद्दीपन अनुक्रिया संबंधो का जोड़ा है।
   जैसे – कार चलाना, दरवाजा खोलना।
4. **शाब्दिक साहचर्य अधिगम** – वह अधिगम जिसमें व्यक्ति को उद्दीपन अनुक्रिया का ऐसा क्रम जिसमें शाब्दिक अभिव्यक्ति निहित होती है।
   जैसे – गाना, कविता व कहानी के माध्यम से सीखना।
5. **विभेदीकरण अधिगम** – इसमें व्यक्ति विभिन्न उद्दीपनों के प्रति विभिन्न अनुक्रिया करना सीखता है।
   जैसे – फुटबॉल व वॉलीबॉल में अन्तर सीखना, वर्ग व आयत में अन्तर करना।
6. **संप्रत्यय अधिगम** – कई वस्तुओं के सामान्य गुणों के आधार पर कोई विशेष अर्थ ग्रहण करना।
   जैसे – हिरण, भालू, हाथी आदि का अर्थ हम जंगली पशुओं के संप्रत्य के रूप में ले सकते है।
7. **नियम / सिद्धांत अधिगम** – नियम अधिगम में दो या दो से अधिक संप्रत्ययों के बीच एक नियमित संबंध का पता चलता है।
   जैसे – बालकों द्वारा व्याकरण, गणित, विज्ञान आदि के समूह का अधिगम।
8. **समस्या समाधान अधिगम** – इस अधिगम में व्यक्ति किसी नियम के उपयोग से कोई समस्या का समाधान करता है व नए तथ्य को सीखता है।
   - यह अधिगम का सर्वश्रेष्ठ प्रकार है। **[HTET - 2013]**

   नोट – गेने नें संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया को तीन इकाइयों में बाँटा है–
   i. अधिगम की तैयारी
   ii. अधिगम अर्जन
   iii. अधिगम का स्थानातंरण

- गेने ने अधिगम की समग्र प्रक्रिया को समझनें के लिए आठ अवस्थाओं की पहचान की है –

i. अधिग्रहण
ii. प्रत्याशा
iii. प्रत्यास्मरण
iv. प्रत्यक्षीकरण
v. अनुक्रिया
vi. पुनर्बलन
vii. मूल्यांकन
viii. सामान्यकरण

अधिगम को प्रभावित करनें वाले कारक

1. **विषय सामग्री का स्वरूप** – सीखी जाने वाली विषय सामग्री कठिन व अर्थहीन होने पर सीखने में बाधा आती है, वही सामग्री सरल व अर्थपूर्ण होने पर आसानी से सीखा जा सकता है।
2. **शैक्षिक वातावरण** – अधिगम में वातावरण का बहुत बड़ा योगदान है। अधिगम बालक स्वयं की क्रियाओं व समाज दोनों से सीखता है, अतः सीखनें के लिए परिवार, समाज, विद्यालय का वातावरण उचित होना जरूरी है।
   - **योकम एवं सिम्पसन** – सामाजिक वातावरण के अभाव में अधिगम असंभव है।
3. **बालकों का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य** – जो बालक शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे वे जल्दी सीख लेंगे, इसके विपरीत जो बालक अस्वस्थ होंगे वे देरी से व काम सीख पाते है।
4. **अभिप्रेरणा** – अधिगम की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। छात्रों को क्रियाशील बनाने के लिए प्रेरको की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। अभिप्रेरणा सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाती है।
   - प्रभावी अधिगम के लिए कक्षा में बालकों को समय–समय पर प्रशंसा अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
   - **स्टीफेन्स** – "शिक्षक के पास जितने भी साधन उपलब्ध है, उनमें प्रेरणा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।"
   - **स्कीनर** – अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वश्रेष्ठ राजमार्ग है। अभिप्रेरणा, अधिगम की सुनहरी सड़क है।

[CTET, REET - 2016]

5. **परिपक्वता** – शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्वता वाले बालक नये कार्य को जल्दी सीखते है व परिपक्वता की अनुपस्थिति में अधिक समय व अधिक श्रम से सीखा जा सकता है।
   - **कोलेसनिक** – परिपक्वता और सीखना पृथक प्रक्रियाएँ नहीं है, वरन एक–दूसरे से अविच्छिन रूप में संबंध व एक–दूसरे पर निर्भर है।
6. **समय एवं थकान** – समय अधिगम को प्रभावित करता है। सुबह के समय जब बालक विद्यालय आते है, उसमें स्फूर्ति होती है व आसानी से सीखते है। जैसे–जैसे शिक्षण के घण्टे बीतते जाते है, बालको में थकान व शिथिलता आ जाती है। परिणामतः इनकी सीखने की क्रिया मंद हो जाती है।
7. **सीखने की विधि** – सीखने की विधि जितनी रूचिकर व उपयुक्त होगी, सीखना उतना ही आसान होगा।
   - प्रारम्भिक कक्षाओं में खेल विधि व करके सीखना तथा उच्च कक्षाओं में योजना विधि व सामूहिक विधि सर्वोत्तम होती है।
8. **सीखने की इच्छा** – यदि बालको में सीखने की रूचि नहीं है तो वे किसी भी स्थिति मे सीख नहीं सकेंगे।
   - अभिप्रेरणा के बाद यह सर्वाधिक प्रभावित करने वाला घटक है।
9. **अध्यापक की भूमिका** – सीखने की प्रक्रिया में पथ – प्रदर्शक के रूप में शिक्षक का स्थान अति महत्वपूर्ण है। शिक्षक जितना अधिक योग्य, अच्छे व्यक्तित्व वाला, प्रतिभाशाली व गुणवान होगा अधिगम उतना ही प्रभावी होगा।

अधिगम शैलियाँ

संबंधात्मक शैली	विश्लेषणात्मक शैली
1. सूचना का समग्र चित्र के अंश के रूप में प्रत्यक्षण करना।	1. समग्र चित्र में से किसी सूचना को निकाल लेने में सक्षम होना (विस्तृत आरेख पर फोकस)।
2. अंतर्ज्ञानात्मक चिंतन का प्रदर्शन।	2. अनुक्रमिक एवं संरचित चिंतन का प्रदर्शन।
3. मानवीय एवं सामाजिक विषयवस्तु से संबंधित तथा आनुभविक/सांस्कृतिक प्रासंगिकता की सामग्री का सुगमतापूर्वक अधिगम करना।	3. उन सामग्रियों का सुगमता से अधिगम करना जो अचेतन तथा अवैयक्तिक हों।
4. मौखिक रूप से प्रस्तु विचारों एवं सूचनाओं के लिए अच्छी स्मृति होना, विशेषतः यदि वे प्रासंगिक हो।	4. अमूर्त विचारों एवं अप्रासंगिक सूचनाओं के लिए अच्छी स्मृति होना।
5. अशैक्षणिक क्षेत्रों में अधिक कार्योन्मुख होते है।	5. शैक्षणिक संदर्भ में अधिक कार्योन्मुख होते है।
6. विद्यार्थियों की योग्यता में प्राधिकारियों के विश्वास अथवा संशय की अभिव्यक्ति से प्रभावित होते है।	6. दूसरों के अधिमत से अधिक प्रभावित न होना।
7. उद्दीप्त न करने वाले कार्य निष्पादन से अलग हटना।	7. उद्दीप्त न करने वाले कार्यों में भी सतत रूप से लगे रहने की क्षमता का प्रदर्शन करना।
8. पारंपरिक विद्यालयी परिवेश के साथ इस शैली का द्वंद्व होना।	8. अधिकांश विद्यालयी परिवेशों से इस शैली का मेल होना।

अधिगम के सिद्धांत/नियम

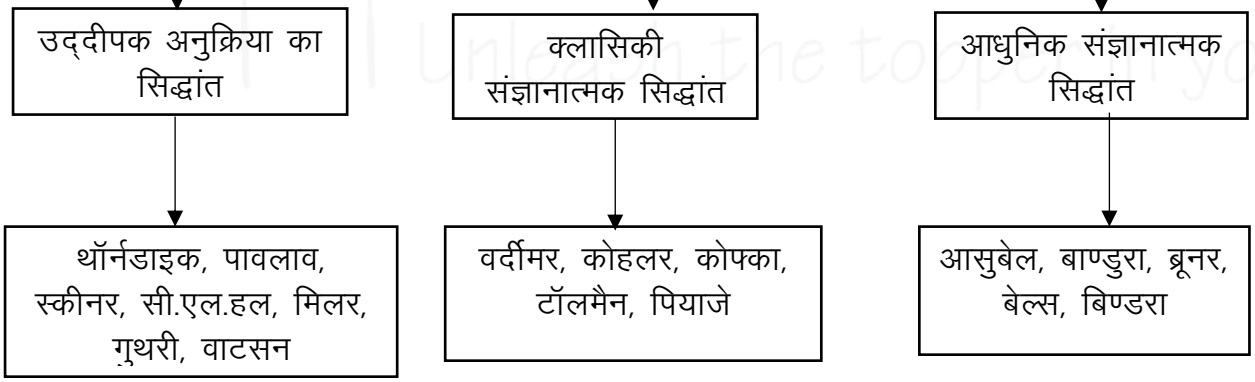

अधिगम की अवधारणाएँ

i. व्यवहारवाद – वाटसन, वुडवर्थ, स्कीनर
ii. संज्ञानवाद –
iii. संरचनावाद/निर्मितवाद – विलियम वुण्ट, टीचनर

- प्रो. बनार्ड ने अपनी पुस्तक "Psychology of Learning & Teaching" (साइकोलॉजी ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग) में अधिगम को सरल बनाने के अनेक कारक बताते है।
- हिलगार्ड ने अपनी पुस्तक "Theories of Learning" में अधिगम के सिद्धांतो का वर्ण किया है।
- अमेरिकी विचारक थॉर्नडाइक ने अपनी पुस्तक "Education Psychology" में अधिगम को दो भागो में बाँटा है।

1. **मुख्य नियम (3) [UPTET - 2016]**
   i. तत्परता का नियम
   ii. अभ्यास का नियम
   iii. प्रभाव का नियम

2. **गौण नियम (5)**
   i. बहुप्रतिक्रिया का नियम
   ii. मनोवृति का नियम
   iii. आंशिक क्रिया का नियम
   iv. आत्मीकरण का नियम
   v. साहचर्य परिवर्तन का नियम

मुख्य नियम

1. तत्परता का नियम [CTET – 2013, 2nd Grade, 1st Grade – 2014]

अन्य नाम – तैयारी का नियम, प्रेरणा का नियम, मानसिक तैयारी का नियम

- इस नियम का अभिप्राय यह है कि यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार या तत्पर होते है तो हम उसे शीघ्र ही सीख लेते है। अगर तैयार नहीं हैं तो नहीं सीख पाते है।

जैसे – (i) यदि बालक में अंग्रेजी सीखने की इच्छा है तो सीख लेता है अन्यथा नहीं।

(ii) घोड़े को पानी के पास ले जाया जा सकता है, लेकिन पानी पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

भाटिया – तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, युद्ध को आधा विजय कर लेना है।

2. अभ्यास का नियम

- **उपनाम** – उपयोग – अनुपयोग का नियम, अभ्यास – अनाभ्यास का निमय
  यदि हम किसी कार्य का अभ्यास करते है, तो हम उसे सरलतापूर्वक करना सीख जाते है। **[REET - 2018]**
- **कोलसेनिक** – अभ्यास का नियम किसी कार्य की पुनरावृत्ति, पुनर्विचार या अभ्यास के औचित्य को सिद्ध करता है।

3. प्रभाव का नियम [UPTET - 2016] [HTET - 2018]

उपनाम – संतोष या असंतोष का नियम

- इस नियम मे के अनुसार, हम उस कार्य को सीखना चाहते है, जिसका परिणाम हमारे लिए हितकर होता है या जिससे हमें सुख या संतोष मिलता है।
- यदि हमें किसी कार्य को करने या सीखने में कष्ट होता है, तो हम उसको कर नहीं पाते हैं अतः इसको असंतोष का नियम कहते है।

गौण नियम

1. **बहुप्रतिक्रिया का नियम**
   - नया कार्य सीखते समय प्रतिक्रियाएँ ज्यादा होती है, पर जब वांछित प्रतिक्रिया करने से उसे सफलता मिल जाती है, तो वह उसे दोहराता है। **[HTET - 2018]**
2. **मनोवृत्ति का नियम**
   - जिस कार्य के प्रति हमारी जैसी मनोवृत्ति होती है उसी अनुपात में हम उसको सीखते है। यदि हम कार्य करने के लिए तैयार है तो सीख जाते हैं, अगर मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं तो कार्य को नहीं कर पाते है।
3. **आंशिक क्रिया का नियम**

   हम जिस कार्य को करना चाहते है, उसको छोटे–छोटे भागों में विभाजित कर लेते है तो सीखना सुविधाजनक हो जाता है।
   - इस नियम पर अंश से पूर्ण की और शिक्षण सिद्धांत आधारित है। **[MPTET - 2015]**
4. **आत्मीकरण का नियम**

   इस नियम के अनुसार हम नवीन ज्ञान को अपने पुराने ज्ञान में आत्मसात कर लेते हैं।
5. **साहचर्य परिवर्तन का नियम**

   इस नियम में पहले कभी की गई क्रिया को उसी के समान दूसरी परिस्थिति में उसी प्रकार करना। इसमें क्रिया का स्वरूप तो वही रहता है, पर परिस्थिति बदल जाती है।

   जैसे – यदि माँ का बच्चा मर जाता है, तो वह उसकी फोटो को उसी प्रकार सीने से लगाती है जिस प्रकार वह बच्चे को लगाती थी।

1. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत – थॉर्नडाइक – 1913

- **प्रयोग** – भूखी बिल्ली पर,
- **उद्दीपक** – माँस का टुकड़ा
- Book – शिक्षा मनोविज्ञान "Education Psychology" में किया।
- इस सिद्धांत से जुड़े कुछ प्रत्ययों का वर्णन अपनी पुस्तक – "Animal Intelligence" में भी किया।

सिद्धांत के उपनाम

- प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत **[UPTET – 2018, 2017]**
- प्रयत्न एवं भूल का सिद्धांत
- आवृत्ति का सिद्धांत
- S-R Bond (बंद) का सिद्धांत
- संबंधवाद का सिद्धांत
- अधिगम का बंद सिद्धांत
- साहचर्य का सिद्धांत

सिद्धांत का अर्थ – जब व्यक्ति कोई कार्य सीखता है, तब उसके सामने एक विशेष स्थिति या उद्दीपक होता है, जो उसे एक विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करनें के लिए प्रेरित करता है, जिससे एक विशिष्ट उद्दीपक का विशिष्ट प्रतिक्रिया से संबंध स्थापित हो जाता है।

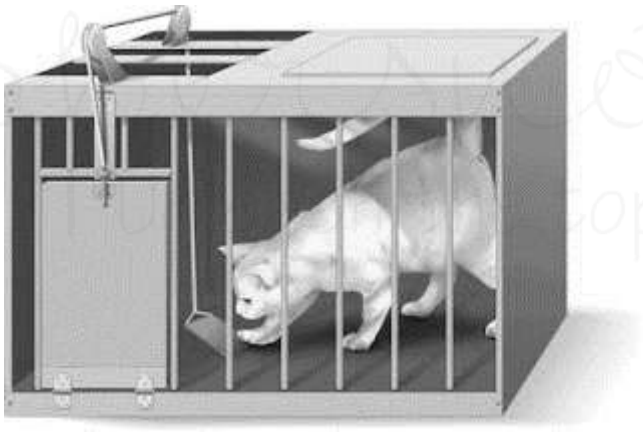

- **थॉर्नडाइक का प्रयोग** – थॉर्नडाइक ने एक भूखी बिल्ली को पिंजरे में बंद करके यह प्रयोग क्रिया व पिंजरे के बाहर मछली के माँस का टुकड़ा रखा। भूखी बिल्ली पिंजरे के बाहर रखे माँस के टुकड़े को प्राप्त करने हेतु, पिंजरे से बाहर आने के अनेक त्रुटिपूर्ण प्रयास करती है व अन्त में पिंजरा खोलना सीख जाती है।
  उदाहरण – चम्मच से खाना, जूते पहनना, टाई की गाँठ बांधना, बालक का चलना इसी सिद्धांत के अदाहरण है।
- **क्रो एवं क्रो** – गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र, जैसे गंभीर चिन्तन वाले विषयों को सीखने में यह सिद्धांत उपयोगी है।
- **कोलसेनिक** – लिखना, पढना, गणित सिखाने में यह सिद्धांत उपयोगी है।

सिद्धांत में शिक्षा का महत्त्व

1. बालकों में परिश्रम के प्रति आशा का संचार करता है।
2. यह सिद्धांत मंद बुद्धि बालकों के लिए उपयोगी है।

3. यह सिद्धांत मानता है कि बालक निश्चित रूप से सीखेगा।
4. बालकों में अनुभवों से लाभ उठानें की क्षमता का विकास करता है।
5. इस सिद्धांत में बालक गलतियों से सीखता है।

सिद्धांत के दोष

1. यह सिद्धांत सीखने की विधि बताता है कारण नहीं
2. यह सीखने की क्रिया को यांत्रिक बना देता है, जिससे मनुष्य के विवेक गुणों का महत्व नहीं रहता है।
3. सीखने की गति अनियमित होती है।
4. यह सिद्धांत रटने की क्रिया पर बल देता है।
5. यह सिद्धांत अधिगम को बहुत धीमी प्रक्रिया मानता है। प्राणि सदैव प्रयास एवं त्रुटि से ही नहीं सीखता हैं।

2. पावलाव का अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धांत [BTET - 2012]

- अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का प्रतिपादन रूस के शरीर शास्त्री आई.पी. पावलाव नें किया था।

सिद्धांत के उपनाम [NCERT – Page - 114]

1. शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धांत – (क्लासिकल कंडीशन थ्योरी) **[REET - 2021]**
2. अनुबंधित अनुक्रिया का सिद्धांत **[HTET - 2018]**
3. संबंध प्रतिक्रिया का सिद्धांत
4. अस्वाभाविक अनुक्रिया का सिद्धांत
5. प्रतिस्थापन अधिगम सिद्धांत
6. उद्दीपन अनुबंधन सिद्धांत
7. परम्परागत अनुबंधन सिद्धांत
8. प्रतिवादी, प्रतिक्रियात्मक एवं अनुबंधन का सिद्धांत

प्रयोग – कुत्ते पर

- पावलाव ने कुत्ते पर प्रयोग किया। उसने कुत्ते को भोजन देने से पहले कुछ दिनों तक घण्टी बजाई। उसके बाद उसनें भोजन न देकर केवल घण्टी बजाई। तब भी कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगी। इसका कारण यह था कि कुत्ते ने घण्टी बजनें से सीख लिया था कि उसे भोजन मिलेगा। घण्टी के प्रति कुत्ते की इस प्रतिक्रिया को पावलाव ने संबंध सहज–क्रिया कहा है।
- पावलाव को 1904 में पाचन क्रिया के अध्ययन के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।
- पावलाव ने बताया कि यदि अस्वाभाविक उद्दीपक को किसी स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार–बार दिया जाता है तो अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रति वैसी ही अनुक्रिया करता है जैसा कि वह उपयुक्त एवं स्वाभाविक उद्दीपक के प्रति करता है।